



Achchhi Niyat Ki Barakat (Gujarati)

अच्छी नियत की बरकत

- नियत की बरकत से मस्जिद की दिलचस्प छिंकायत 01
- अच्छों की नकल भी अच्छी होती है 10
- उम्मेते मुस्तफा की जुसूसियत 20
- नमाजे वा जमाअत का अच्छा जजबा 26
- सब से पहले क्या सीखना इर्ज है 28





अस्थी नियत की भरकत

A1

मदीनतुल
मुनव्वरहे

मस्सतुल
मुकरमहे



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अः शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, भानिये दा'वते इस्लामी हजरते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रजवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढने से पढले जैल में दी हुई दुआ
पढ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे भोल दे और
हम पर अपनी रहमत नाज़िल करमा ! ओ अजमत और बुजुर्गा वाले !

(مُسْتَضَرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आभिर अेक अेक बार दुइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिभे गभे मदीना
व बकीअ
व मग्दिरत



13 शव्वालुल मुकरम 1428 हि.

अस्थी नियत की भरकत

येह रिसाला (अस्थी नियत की भरकत)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, भानिये दा'वते इस्लामी
हजरत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी
रजवी जियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उई ज़बान में तहरीर करमाया है.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को
गुजराती रस्मुल भत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तभतुल
मदीना से शाअेअ करवाया है. इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें
तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब जरीअअे मक्तूब, ईभेईल या sms)
मुत्तलअ करमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तभतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाजा, अहमदआबाद1, गुजरात, ईन्डिया

MO. 9898732611 Email : hind.printing92@gmail.com



मस्सतुल
मुकरमहे

व्वन्नतुल
बकीअ

मदीनतुल
मुनव्वरहे

व्वन्नतुल
बकीअ





इरमाने मुस्तफ़ा : عَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा
जिक हो और वोह मुज पर दुइदे पाक न पड़े. (ترمذی)

अद्लाह तआला ने अच्छी निय्यत की वजह से उस अजमी को
बपश दिया. (فَوْتُ الْقَلُوبِ ج ٢ ص ٢١٣)

**अच्छी निय्यतें दुश्वार हैंँ इस से तो पीठ पर कोडे पाना
आसान हैँ :** अच्छी अच्छी निय्यतें करने के लिये ज़रूरी हैँ के जेहून
हाजिर रहे, जो अच्छी निय्यतों का आदी नहीं हैँ उसे शुइअ में ब
तकल्लुफ़ इस की आदत बनानी पड़ेगी लिहाजा इब्तिदाअन इस के
लिये सर जुकाअे, आंभें बन्द कर के जेहून को मुप्तलिफ़ पयालात से
पाली कर के यकसू हो जाना मुईद हैँ. इधर उधर नज़रें धुमाते हुअे,
बदन सहलाते पुजाते हुअे, कोई चीज रपते उठाते हुअे या जल्द बाज़ी
के साथ निय्यतें करना याहेंगे तो शायद हो नहीं पायेंगी. निय्यतों की
आदत बनाने के लिये इन की अहम्मियत पर नज़र रपते हुअे आप
को सन्जुदगी के साथ पडले अपना जेहून बनाना पड़ेगा. हज़रते सय्यिदुना
नुअैम बिन हम्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي إرमाते हैंँ : “हमारी पीठ का
कोडे पाना अच्छी निय्यत के मुकाबले में आसान हैँ.” (تنبيه المفترين ص ١٥)
**दुन्यवी ने'मतों के सभब आभिरत की ने'मतों में कमी
आयेगी :** हुजुजतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हाभिद
मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي का
इशादे आली हैँ : “अद्लाह क़ुल्ल की ने'मतों से लुत्फ़ अन्होउ होना
गुनाह नहीं हैँ, लेकिन इस से सुवाल ज़रूरी होगा और जिस से हिसाब
में पूछगछ हुई वोह हलाक हो जायेगा और जो आदमी दुन्या में
मुबाह चीजों को इस्ति'माल करता हैँ अगर्चे इसे क्रियामत में इस





કરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالصَّلَاةَ : જો મુઝ પર દસ મરતબા દુરુદે પાક પદે અલ્લાહ
 (طبرانی) (उस पर सो रडमतेँ नाज़िल करमाता है.)

પર અઝાબ નહીં હોગા લેકિન ઈસી મિકદાર મેં આખિરત કી ને'મતેં
 કમ હો જાએંગી, ગૌર તો કીજિયે ! કિતને બડે નુક્સાન કી બાત હૈ
 કે ઈન્સાન ફાની ને'મતોં કે હુસૂલ મેં બહુત જલ્દી કરે ઓર ઈસ કે બદલે
 (احياء العلوم ج ٥ ص ٩٨) (અહીંને ને'મતોં મેં કમી કે ઝરીએ નુક્સાન ઉઠાએ.)

दुन्यवी लज़्जात का टिल से मिटा दे शौक तू

कर अता अपनी इबादत का इवाही जौक तू

اَوْبَيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالصَّلَاةَ

પુશ્બૂ લગાને કી નિચ્ચતેં : અલ્લાહ તઆલા કી બે શુમાર ને'મતોં
 મેં સે પુશ્બૂ ભી એક બહુત પ્યારી ને'મત હૈ, ઈસ કા ઈસ્તિ'માલ
 કરના મુબાહ (યા'ની ન સવાબ ન ગુનાહ) હૈ, યેહ ને'મત ઈસ તરહ
 ઈસ્તિ'માલ કરની ચાહિયે કે ઈબાદત બન જાએ ઓર સવાબ હાથ
 આએ. યુનાન્યે ઈસ કો “ઈબાદત” બનાને કે લિયે અચ્છી અચ્છી
 નિચ્ચતેં કરની હોંગી. જબ ભી કોઈ કામ કરને લગેં તો એક દમ
 શુરુઅ મત કર દીજિયે, પહલે કુછ ઠહર જાઈયે ઓર ઝેહન પર ઝોર
 દે કર અચ્છી અચ્છી નિચ્ચતેં કર લીજિયે. મસલન પુશ્બૂ લગાની હૈ
 તો ઉસ કી શીશી ઉઠાને સે કબ્લ ઓર અગર ઉઠા હી લી હૈ તો
 ખોલને સે પહલે યક્સૂઈ કે સાથ, સર ઝુકા કર હો સકે તો આંખેં
 બન્દ કર કે ઈત્મીનાન સે ઓર ખૂબ તવજ્જોહ કે સાથ નિચ્ચતેં
 કીજિયે. ઈત્ર લગાને કે ઝરીએ મુખ્તલિફ સવાબાત કમાને કા મશ્વરા
 દેતે હુએ આરિફ બિલ્લાહ, મુહકકિક અલલ ઈત્લાક, ખાતિમુલ
 મુહદિસીન, હઝરતે અલ્લામા શૈખ અબ્દુલ હક મુહદિસ દેહલવી





इरमाने मुस्तफ़ा عَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तलकीक वोह बढ अप्त हो गया. (अबु सन्नी)

लिखते हैं : मुभाह कामों में भी अच्छी नियत करने से सवाब मिलेगा, मसलन पुशबू लगाने में इत्तिबाअे सुन्नत और (मस्जिद में जाते हुअे लगाने पर) ता'जीमे मस्जिद (की नियत भी की जा सकती है), इरहते दिमाग (या'नी दिमाग की ताजगी) और अपने इस्लामी भाइयों से ना पसन्दीदा बू दूर करने की नियतें हों तो हर नियत का अलग सवाब मिलेगा. (اشعة للمعات ج ١ ص ٣٧)

यहां इरबे डाल मजीद नियतें भी शामिल की जा सकती हैं मसलन बिस्मिल्लाह पढ कर शीशी उठाओंगा, बिस्मिल्लाह पढ कर ढकन भोलूंगा, बिस्मिल्लाह पढ कर लगाओंगा, मुसल्मानों और इरिशतों को पुशबू से इरहत (या'नी सुइर व पुशी) पड़ोंयाओंगा, (पुसूसन गरमी में कपड़ों के अन्दर अगर पसीने की बढबू हो जाती हो तो येह नियत भी की जा सकती है के) पुढ से बढबू दूर कर के मुसल्मानों को गीबत से बचाओंगा, (नमाज से कबल लगाने में येह नियत भी शामिल कर सकते हैं के) नमाज के लिये जीनत डसिल करूंगा. पुशबू सूंध कर दुइद शरीफ़ पढ़ूंगा, (पुशबू ने'मत है इस लिये इस्ति'माल करने और सूंधने में बतौरे शुके इलाही) कहुंगा. पुशबू लगाओंगा ताके अकल में इजाइ हो, इस से दीनी अहकाम (दीनी ता'लीम, दीनी तदरीस, सुन्नतों बरे बयान वगैरा) समजने में मदद डसिल करूंगा.

“ओडयाउल उलूम” में है : डजरते सय्यिदुना इमाम शाइइ इरमाते हैं : “जिस की पुशबू अच्छी हो उस की अकल में इजाइ होता है.”

(احياء العلوم ج ٥ ص ١٨)





इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (مجمع الزوائد)

पुशबू लगाने की गलत निय्यतों की निशान देही : भीठे भीठे
 ईस्लामी भाईयो ! पुशबू लगाने में अक्सर शैतान गलत निय्यत में मुत्तला कर देता है. लिहाजा ईत्र लगाने में अच्छी निय्यतों का पुसूसी ओहतिमाम होना याहिये. युनान्थे हुजजतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना अबू हामिद ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का इरमाने आली है : ईस निय्यत से पुशबू लगाना के लोग वाह वाह करें या कीमती पुशबू लगा कर लोगों पर अपनी मालदारी का सिक्का बिठाने की निय्यत हो तो ईन सूरतों में पुशबू लगाने वाला गुनहगार होगा और पुशबू बरोजे क्रियामत मुदरि से भी ज़ियादा बढबूदार होगी. (ایضاً)

दुन्या पसन्द करती है ईत्रे गुलाब को

लेकिन मुझे नबी का पसीना पसन्द है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मदनी काईले में सफ़र की निय्यत की भरकत : भीठे भीठे
 ईस्लामी भाईयो ! दा'वते ईस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी काईलों में सफ़र और रोज़ाना इक़े मदीना के ज़रीअे मदनी ईन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहाँ के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये. ان شاء الله عزوجل
 और अच्छी निय्यतों की आदात नसीब होंगी. अेक ईस्लामी भाई





इरमाने मुस्तफा عَلَّمَ اللَّهُ كَعَالَ عَتِيَّةَ وَالْبَيْتَ سَمَّ : जिस के पास मेरा जिऊ हुआ और उस ने मुज पर
दुइद शरीफ न पढा (उस ने जइ की। (عبدالرزاق)

के बयान का ખुलासा है, मेरी झौंज में मुलाजमत थी और मैं मोडर्न नौ जवान था, अलबत्ता नमाज पढा करता था. अम्मीजान की बीमारी के बाईस सप्त तश्वीश थी, अक ईस्लामी बाई ने ईन्फिरादी कोशिश करते हुए मदन की काइले में सइर की तरगीब दी, मैं ने मा'जिरत याइते हुए उन से कहा : अम्मीजान सप्त बीमार हैं ऐसी डालत में उन्हें छोड कर सइर नहीं कर सकता. उन्होंने ने भशवरा दिया : “आप सिई मदन की काइले में सइर की नियत कर लीजिये के जब भी मौकअ मिला, कर लूंगा और आज नमाजे तइजुइद अदा कर के गिडगिडा कर अम्मीजान की सिइलत याबी के लिये हुआ इरमाईये عَلَّمَ اللَّهُ كَعَالَ عَتِيَّةَ وَالْبَيْتَ سَمَّ उइर करम डोगा.” उन्होंने ने येड बात कुइ अैसे दिल नशीन अन्दाज में कही के दिल को लग गई और मैं ने सइर की नियत कर ली. रात उठ कर तइजुइद अदा कर के ખूब रो रो कर हुआ मांगी, इर नमाजे इज के लिये मस्जिद का रुખ किया, वापसी पर जब घर पडोंया तो हैरत से ખडे का ખडा ही रह गया ! क्या देખता हूं के मेरी वोड जार नजार (या'नी कमजोर) और सप्त बीमार अम्मीजान जो खुद उठ कर बैतुल खला (या'नी वोशइम) भी नहीं जा सकती थीं बैठी ईल्मीनान से कपडे धो रही हैं ! मैं ने अर्ज की ! अम्मीजान ! आप आराम इरमाईये कहीं तबीअत जियादा न बिगाड जाअे, मैं खुद कपडे धो लूंगा. ईस पर इरमाया : बेटा ! عَلَّمَ اللَّهُ كَعَالَ عَتِيَّةَ وَالْبَيْتَ سَمَّ आज मुजे न कोई दई है न तकलीफ, मैं अपने आप को बहुत डलकी इलकी मडसूस कर रही हूं. येड सुन कर मेरी





इरमने मुसुतुल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ओ मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ पढेगा में
कियामत के दिन उस की शकामत करुंगा. (जुबुल जवाम)

आंणों में ढुशी के आंसू आ गये, मेरे हिल में अेक इतमीनान की
केइरुतत पैदा हुई के सइर की निरुतत की बरकत से हुआ को
मकबूलरुतत मल गई है. इस्लामी लार्थ से मुलाक़ात पर तइसील
अरु की, तो उनुओं ने ढूढ लूसला बढाया और हमददना मश्वरा
दरुा के बरुा तारुीर मदनी कइले में सइर कर लीरुये. लरुाज
में आशरकाने रसूल के साथ दारुवते इस्लामी के सुनुतों की तरबुतत
के मदनी कइले का मुसकरर बन गया. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ मदनी कइले
में सुनुतों लरे सइर और इस दूरान आशरकाने रसूल की सुलबत
की बरकत से हमारे घर में मदनी मारुल बन गया, मुज जैसा
मोडन नौ जवान दारुी और इमामा सज्ज कर सुनुतों की ढरदमत
में लग गया, अम्मीजान और मेरे बरुयों की मां दानों इस्लामी
बलनों के इजतुमारु में शरकत करती हैं. गौर इरमारुये ! मैं ने
सरुई मदनी कइले में सइर की निरुतत की और इस के सबल बरकत
ही बरकत हो गई तो न जाने मदनी कइलों में सुनुतों लरे सइर
की क्यु क्यु मदनी बलरें होंगी ! कश ! हर इस्लामी लार्थ हर मारु
कम अज कम तीन दिन के मदनी कइले में सइर का आदी बन जारुे.

अरुी निरुतत का इल पारुगे बे बदल सब करु निरुततें कइले में यलु
दूर ढीमाररुयां और नु दाररुयां हों, दलें मुशुकलें कइले में यलु

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी लार्थयो ! देढा आप ने ! मदनी कइले

की निरुतत करने वारुे का बेडा पारु हो गया. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ मां की





इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस्त के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुइरे पाक न पढा उस ने जन्नत का रास्ता छोड दिया. (طبرانی)

सिद्धत के साथ साथ घर त्तर के लिये आभिरत की राहत के हुसूल के लिये तय्यारियों का त्ती सामान हो गया. वाकेई अच्छी निर्यत फिर अच्छी निर्यत होती है. अच्छी निर्यत से मदनी काकिले में सकर करने के क्या कलने !

जब जूता पहनने में उलटे पाँउं से पहल की तो.....: हुजूर मुहदिसे आ'जम हजरत अल्लामा मौलाना सरदार अहमद कादिरि यिश्ती رَحْمَةُ اللهِ الْبَرِّیُّ के ओक शागिर्द रशीद इरमाते हें के मैं 1955 सि.ई. में जब दौरमे हदीस शरीफ़ से इररिग हुवा और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से रुफ़सत ले कर आने लगा, मैं ने गलती से अपना जूता पहले बाअें (या'नी उलटे) पाँउं में पहन लिया. आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने देप कर मुजे इौरन वापस बुला लिया, मुजे अपनी गलती का ओहसास हो गया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने (मुजे नेकी की दा'वत देते हुअे) इरमाया : "जूता पहनने में सुन्नत येह है के पहले दाअें (या'नी सीधे) पाँउं में पहना जाअे और जूता उतारने की सुन्नत येह है के पहले बाअें (या'नी उलटे) पाँउं से उतारा जाअे."

(इयाते मुहदिसे आ'जम, स. 85)

जूते पहनने की निर्यतें : कोई सा त्ती काम हो ओक दम शुइअ कर देने के बजाअे पहले कुछ ठहर कर निर्यत करने की आदत बनानी याहिये मसलन जूते पहनने लगे हें तो रुक जाईये और हसबे डाल पहले येह निर्यतें कर लीजिये : ❀ इत्तिबाअे सुन्नत में जूते पहनूंगा ❀

यलने वाले के जूतों की आवाज यूंके सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ





इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुरइदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारे
मुज़ पर दुरइदे पाक पढना तुम्हारे विये पाकीज़गी का बाँस है. (ابویعلیٰ)

को ना पसन्द थी इस लिये राह चलते या सीढी चढते उतरते हुअे
आवाज़ न पैदा हो इस का ખयाल रખूंगा ❀ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ
कर पढनूंगा ❀ जूते के जरीअे पाँउ को जम्म या गन्दगी वगैरा से
महफूज़ रખने की कोशिश के जरीअे ईबादत पर महद हसिल कइंगा
❀ पढनने में सीधे जूते से पढल करने की सुन्नत अदा कइंगा ❀
सुन्नते तन्ज़ीफ़ अदा कइंगा या'नी पाँउ को मैल कुथैल से बयाँगिगा.
ईसी तरीके पर हस्बे हल मजीद निय्यतें ली की ज़ा सकती हैं. इसी
तरह जूते उतारते वक्त ली بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढने, उलटे से पढल
करने, भौकअ हो तो बुजुर्गों की अदा की मुशाबहत करते हुअे जूतों
का अगला रुख क़िब्ले की तरफ़ रખने वगैरा की निय्यतें हो सकती हैं.
जूते क़िब्ला रुख रખने के मुतअद्विक अर्ज़ है, हुज़ूर मुहदिसे आ'उम
हजरत मौलाना सरदार अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد के शागिर्द व मुरीद
मेरे मफ़्दूम व मोहतरम हजरते क़िब्ला मुफ़्ती अब्दुल्लतीफ़ साहिब
رَفِیْعَةُ اللّٰهِ غَمْرَةَ की सोहबत में यन्द रोज़ गुज़ारने की सगे मदीना
को सआदत मिली, उन दिनों मुफ़्ती साहिब رَفِیْعَةُ का येह अमल
देखा के हमारे बे तरतीब रખे हुअे जूतों, यप्पलों का रुख अपने हस्ते
मुबारक से ज़ानिबे क़िब्ला इरमा देते थे मैं ने मुतअजिज़ह हो कर
सबब दरयाफ़्त किया तो इरमाया के मैं ने क़िब्ला उस्ताजे गिरामी
हुज़ूर मुहदिसे आ'उम मौलाना सरदार अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد को
देखा है के आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالَى عَلَيْهِ न सिर्फ़ जूते बल्के हर चीज़ क़िब्ला इ
रखना पसन्द इरमाते थे और इस अमल में सरकारे गौसे आ'उम

رَفِیْعَةُ اللّٰهِ غَمْرَةَ की इस लिकायत की तरफ़ ईशारा किया : युनान्थे





फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ न पढे तो वोह लोगों में से क्यूस तरीन शप्स है. (सुन्दह अहमद)

लोटा किब्ला  **रुभ डो गया** : अेक बार जलान शरीफ के मशाएभे किराम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** का अेक वरुद डुजूर सय्यिहुना गौसे आ'उम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَمِيم** की भिदमते सरापा अउमत में डालिर हुवा, उनुहों ने आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के लोटे शरीफ को गैरे किब्ला रुभ पाया (तो उस की तरफ आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की तवज्जोड दिलाई ईस पर) आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अपने भादिम को जलाल त्परी नउर से देभा. वोह आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के जलाल की ताभ न लाते हुअे अेक दम गिरा और तउप तउप कर जान दे दी. अब अेक नउर लोटे पर डाली तो वोह भुद भभुद किब्ला रुभ डो गया. (بَهْجَةُ الْأَسْرَارِ ص १०१)

अरुधों की नकल त्पी अरुधी डोती है : येड आम दस्तूर है के जिस से मडुभत डोती है उस की डर अदा प्यारी लगती है, **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَمِيم** सगे मदीना **غُفَى عَنْهُ** को सरकारे गौसे आ'उम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَمِيم** और, डुजूर मुडदिसे आ'उम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان** से भहुत मडुभत है. लिडाला जब से आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की येड अदा मा'लूम हुई है ईस अदा को अदा करने की आदत बना ली है और अपने लोटे, यप्पल और दीगर यीजों का अगला रुभ जानिभे किब्ला रहे ईस की कोशिश रहती है. अरुधी अरुधी निर्यतों के साथ अदलाड वालों की नक्काली में यकीनन बरकत डी बरकत है और क्यूं न डो के काअेनात के तमाम अदलाड वालों के सरदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फरमाने मुश्कभार है : **يَا نَبِيَّ الْأَنْبِيَاءِ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ وَالْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ وَالْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ** या'नी बरकत तुभारे बुजुर्गों के साथ है. (أَلْفَمَجْمُ الْأَوْسَطِ ص ६२ حَدِيث १९९१)





ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : તુમ જહાં ભી હો મુઝ પર દુરુદ પઢો, કે તુમ્હારા દુરુદ મુઝ તક પહોંચતા હૈ. (طبرانی)

“ચલ મદીના” કે સાત હુરુફ કી નિસ્બત સે જૂતે પહનને કે 7 મદની ફૂલ

દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક્તબતુલ મદીના કા મતબૂઆ 32 સફહાત પર મુશ્તમિલ રિસાલા, “101 મદની ફૂલ” સફહા 20 તા 22 સે (મઅ તસરુફ) અર્ઝ હૈ : ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : ﴿1﴾ જૂતે બ કસરત ઇસ્તિ'માલ કરો કે આદમી જબ તક જૂતે પહને હોતા હૈ ગોયા વોહ સુવાર હોતા હૈ. (યા'ની કમ થકતા હૈ) ﴿2﴾ જૂતે પહનને સે પહલે ઝાડ લીજિયે તાકે કીડા યા કંકર વગૈરા હો તો નિકલ જાએ, કહતે હૈં કિસી જગહ દા'વત મેં ફારિગ હો કર એક સાહિબ ને જૂં હી જૂતા પહના ચીખ નિકલ ગઈ ઔર પાઉં લહૂ લુહાન હો ગયા. દર અસ્લ બાત યેહ હુઈ કે ખાને કે દૌરાન કિસી ને નોકદાર હડી ફેંકી તો વોહ જૂતે કે અન્દર ચલી ગઈ ઔર પહનને વાલે ને જૂતે ઝાડે બિગૈર પહને તો પાઉં ઝખ્મી હો ગયા ﴿3﴾ સુન્નત યેહ હૈ કે પહલે સીધા જૂતા પહનિયે ફિર ઉલટા ઔર ઉતારતે વક્ત પહલે ઉલટા જૂતા ઉતારિયે ફિર સીધા. ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જબ તુમ મેં સે કોઈ જૂતે પહને તો દાઈ (યા'ની સીધી) જાનિબ સે ઇબ્તિદા કરની ચાહિયે ઔર જબ ઉતારે તો બાઈ (યા'ની ઉલટી) જાનિબ સે ઇબ્તિદા કરની ચાહિયે તાકે દાયાં (યા'ની સીધા) પાઉં પહનને મેં અવ્વલ ઔર ઉતારને મેં આખિરી રહે. (بخاری ج ٤ ص ٦٥ حديث ٨٥٥) નુઝૂહતુલ કારી મેં હૈ : મસ્જિદ મેં દાખિલ હોતે વક્ત હુકમ યેહ હૈ પહલે સીધા પાઉં મસ્જિદ મેં રખે ઔર જબ





फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मज्लिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरुद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गये तो वो लबदबूदार मुद्गरि से उठे. (شعب الایمان)

मस्जिद से निकले तो पहले उलटा पाँउ निकाले. मस्जिद के दाखिले के वक्त इस (जूते पहनने की तरतीब वाली) उद्दीस पर अमल दुश्वार है. आ'ला उजरत ईमाम अहमद रज़ा ખान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इस का हल येह ईशार्द फरमाया है : जब मस्जिद में जाना हो तो पहले उलटे पाँउ को निकाल कर जूते पर रખ लीजिये फिर सीधे पाँउ से जूता निकाल कर मस्जिद में दाखिल हों. और जब मस्जिद से बाहर हों तो उलटा पाँउ निकाल कर जूते पर रખ लीजिये फिर सीधा पाँउ निकाल कर सीधा जूता पहन लीजिये फिर उलटा पहन लीजिये. (नुज़्जतुल कारी, जि. 5, स. 530) उजरते सय्यिदुना ईब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ اَنْقَوِي फरमाते हैं : जो शप्स हमेशा जूता पहनते वक्त सीधे पाँउ से और उतारते वक्त उलटे पाँउ से पहल करे वो ल तिल्वी की भीमारी से मलकूज़ रहेगा. (حياة الحيوان ٢٤ ص ٢٨٩) मर्द मर्दाना और औरत ज़नाना जूता ईस्ति'माल करे (5) किसी ने उजरते सय्यिदुना आ'लशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से अर्ज़ की के अेक औरत (मर्दों की तरह) जूते पहनती है. उन्हों ने फरमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मर्दानी औरतों पर ला'नत फरमाई है. (أَبُو دَاوُدَ ٤٦ ص ٨٤ حَدِيثَ ٤٠٩٩) सदरुशरीअह, अदरुत्तरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ اَنْقَوِي फरमाते हैं : या'नी औरतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना याहिये बल्के वो ल तमाम बातें जिन में मर्दों और औरतों का ईम्तियाज़ (या'नी इक) होता है इन में हर अेक को दूसरे की वज़्अ ईप्तियार करने (या'नी





करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरहे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (جمع الجوامع)

नक्काली करने) से मुमानअत है, न मर्द औरत की वजूअ (तर्ज) ईप्तियार करे, न औरत मर्द की. (बहारे शरीअत, जि. 3, स. 422) ﴿6﴾ जब बैठें तो जूते उतार लीजिये के ईस से कदम आराम पाते हें ﴿7﴾ ईस्ति'मावी जूता उलटा पडा हो तो सीधा कर दीजिये. (तंग दस्ती का अक सभब येह बी है के) औंधे जूते को देपना और उस को सीधा न करना. हजारां सुन्नतें सीपने के लिये मकतबतुल मदीना की मत्बूआ दो कुतुब बहारे शरीअत खिस्सा 16 (304 सफ़हात) नीज 120 सफ़हात की किताब "सुन्नतें और आदाब" हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढिये.

आ'ला हजरत की भिदमत में सुवाल : मेरे आका आ'ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मुजदिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह ईमाम अहमद रजा पान عَيْنِي رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की भिदमत में कुछ यूं अर्ज की गइ : कुछ गरीब मुसल्मान ब गरजे तब्लीगे सलात (या'नी नमाज की तब्लीग के लिये) शहर से बाहर मवाजआत (या'नी बा'ज देहात) में पैदल, धूप और प्यास की तकलीफ़ उठा कर बिवा किस्सी जाती नफ़अ के लालय के झी सभीविल्लाह आधी रात से उठ कर गये और दूसरे दिन वापस आये, बा'ज लोग उन में भूके प्यासे बी शामिल थे, उन की कोशिश से तकरीबन अक सो मुसल्मान मुस्तईदे नमाज (या'नी नमाज के लिये तय्यार) हुअे. बयान किया ज़ाअे के उन के लिये क्या अज्ज है ताके आगे हिम्मत बढे. हमारे ईस नेक काम करने पर अक शप्स ने कहा : "ईस में रखा ही क्या है ! कोई अपने लिये नमाज पढेगा तुम क्यूं कोशिश करते हो." वोह शप्स कैसा है जे लोगों का हौसला पस्त करता है ?





इरमाने मुस्तफा ﷺ : मुअ पर दुरद शरीफ पढो, अद्लाह तुम पर
रउमत भेजिगा. (ابن عدی)

आ'ला उजरत का जवाब : भेरे आका आ'ला उजरत, एमामे
अहले सुन्नत, मुजदिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह एमाम अहमद रउा
पान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** ने कुए एस तरह जवाब एशदि इरमाया : नमाउ
की दा'वत देने वालों के लिये उन की नियत पर अजे अजीम है, नभी
मस्तफा ﷺ इरमाते हें : “अगर अद्लाह **عَزَّوَجَلَّ** तुम्हारे जरीजे
किसी अक शप्स को डिदायत अता इरमाजे तो येह तुम्हारे लिये एस से
अख्हा है के तुम्हारे पास सुर्भ गिंट हों.” (صحيح مسلم ص ۱۳۱۱ حديث ۲۴۰۶)
डिदायत को जाने के लिये आते जाते जितने कदम उन के पडे हर
कदम पर दस नेकियां हें, (युनान्जे अद्लाह तआला पारह 22 सूअजे
यासीन की आयत नम्बर 12 में एशदि इरमाता है :)

وَكُتِبَ مَا قَدَّمُوا وَإِنَّا لَهُمْ
(سورة يس: ۱۲)

तरजमजे कन्जुल एमान : और उम
लिफ रहे हें जे उन्हों ने आगे भेजा
और जे निशानियां पीछे छोड गजे.

येह कलना के “तुम कयूं कोशिश करते हो” शैतानी कौल है.

أَمْ بِالْمَغْرُوفِ وَنَبِيِّ عَنِ الْمُنْكَرِ (या'नी नेकी का हुकम देना और बुराई से
मन्अ करना) इर्र है, इर्र से रोकना शैतानी काम है. (शिकार की
मुमानअत के बा वुजूद) बनी एस्राएल में से जिन्हों ने (इफ्ते को)
मछली का शिकार किया था वोह भी बन्दर कर दिये गजे और
जिन्हों ने उन्हें नसीहत करने को मन्अ किया था (वोह भी तआल छो
गजे) (मन्अ करने वालों का कौल पारह 9 सूअतुल आ'राइ की आयत
नम्बर 164 में बयान किया गया है :)





ईरमाने मुस्ताफ़ा : عَسَىٰ اللَّهُ تَعَالَىٰ أَن يَسْمَعَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ : मुज़ पर कसरत से दुर्रुदे पाक पढो भेशक तुम्हारा
मुज़ पर दुर्रुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्दिरत है. (अबिं एसक़ी)

لَمْ تَعْظُونَنَّا قَوْمًا اللَّهُ مَهْلِكُهُمْ أَوْ
مُعَذِّبُهُمْ وَعَذَابُ الْأَشْبَادِ أَثِيمٌ

तरजमअे क-जुल ईमान : क्यूं
नसीहत करते हो उन लोगों को जिन्हें
अद्लाह हलाक करने वाला है या
उन्हें सप्त अज़ाब देने वाला.

(तो गुनाह से रोकने वालों को गुनाह से रोकने के कारे भैर से
मन्अ करने वाले) बी तभाह हुअे और नसीहत करने वालों ने
नज़ात पाई. और येह कलना के “ईस (या’नी नमाज़ की दा’वत देने के
काम) में रभा ही क्या है!” सभ से सप्त कलिमा है, कलने वाले को
तजदीदे ईस्लाम व तजदीदे निकाल याहिये. وَاللَّهُ تَعَالَىٰ أَعْلَمُ.

(मुलभ्भस अज़ इतावा रजविय्या मुभर्रज़ा, जि. 5, स. 117)

सुर्भ उंटों से क्या मुराह है : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो !
आ’ला हज़रत रज्जुतुल्लाह तैअल्लिह के ईस मुभारक इतवे में नेकी की दा’वत
दने वालों की हौसला शिकनी करने वालों के ईस जुम्ले “तुम क्यूं कोशिश
करते हो” को शैतानी कौल करार दे कर ईस की मज़म्मत की गई है,
यहां वोह लोग ईभ्रत हासिल करें जे बसा अवकात मुबद्लिगीन से
कह देते हैं के “छोडो छोडो ईस को समजाने का क्या फ़ाअेदा. येह तो
नेकी की बात मानता ही नहीं” (गुनाह छोडता ही नहीं, सुधरता ही
नहीं, राहे रास्त पर आता ही नहीं) येह जुम्ला बिदकुल गलत गलत और
गलत है यकीनन समजाना फ़ाअेदे से भाली होता ही नहीं, अरखी





इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर ओक दिन में 50 बार दुरदे पाक पढे
कियामत के दिन में उस से मुसाफ़हा करे (या'नी हाथ मिलावे)गा. (ابن بشكوال)

नियत हो तो ईस्लाह के लिये समझाना कारे सवाब है तो क्या “सवाब” मिलने में “झाअेदा” नहीं? “येह मानता ही नहीं!” बोल कर आप क्या कहना चाहते हैं? क्या आप नहीं जानते के मुबल्लिग की जिम्मेदारी “मनवाना” नहीं इकत “पछोयाना” है मनवाने वाली जात रब्बे काअेनात كَرَّجُ की है. ईस इतवे में “मुस्लिम शरीफ़” की येह हदीसे पाक बयान की गई है के अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे जरीअे किसी अेक शप्स को हिदायत अता इरमाअे तो येह तुम्हारे लिये ईस से अच्छा है के तुम्हारे पास सुर्भ गिंट हों. (مسلم من ۱۳۱۱ حدیث ۲۶۰۶) उजरते अल्लामा यहूया बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَمِي ईस हदीसे नबवी की शर्ह में लिखते हैं: “सुर्भ गिंट अहले अरब का बेश कीमत माल समजा जाता था, ईस लिये जर्बुल मसल (या'नी कहावत) के तौर पर सुर्भ गिंटों का जिक्र किया गया. उजरवी उमूर की दुन्यवी चीजों से तशबीह (या'नी मिसाल) सिर्फ़ समझाने के लिये है वरना हकीकत येही है के हमेशा बाकी रहने वाली आभिरत का अेक जर्रा भी दुन्या और ईस जैसी जितनी दुन्याअें तसव्वुर की जा सकें, उन सब से बेहतर है.”

(شرح مسلم للنووي ج ۱ ص ۱۷۸)

सीपने सुन्नतें काफ़िले में यलो वूटने रहमते काफ़िले में यलो
होंगी हल मुश्किलें काफ़िले में यलो पाओगे बरकतें काफ़िले में यलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ





इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : बरोजे कियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह लोग़ा जिस ने दुन्या में मुज पर ज़ियादा दुइदे पाक पढे होंगे. (ترمذی)

मदनी काङ्किले में सङ्कर की 44 निय्यतें : भीठे भीठे ईस्लामी त्माईयो ! आ'ला हज़रत ﷺ से किये जाने वाले सुवाल के ज़रीअे येह त्मी मा'लूम हुवा के नमाज़ों का जज़बा रभने वाले उस दौर के मुसल्मान त्मी नेकी की दा'वत के लिये काङ्किले में सङ्कर किया करते थे और अब तो कैज़ाने रज़ा से ईस मदनी काम के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी मदनी तहरीक, दा'वते ईस्लामी त्मी काईम हो गई है. जिस का मदनी पैगाम ता दमे तहरीर क़मो बेश दुन्या के 150 मुल्कों में पछोंय युका है ! सुन्नतों की तरबियत के मदनी काङ्किले के मुसाफ़िरों के तो अस वारे ही न्यारे हो जाते और नेकियों के ढेर लग जाते हैं, ईस मदनी सङ्कर में जिस कदर अच्छी अच्छी निय्यतें करेंगे ۞ उसी कदर सवाब त्मी बढता यला जाअेगा. मसलन हस्बे हल ईन में येह निय्यतें की जा सकती हैं :

❁ अगर शर्इ मिक्दार का सङ्कर हुवा तो घर में रवानगिये सङ्कर की दो रकअत नइल अदा कइंगे ❁ अपने ज़ाती अर्थ पर सङ्कर कइंगे ❁ पदले से पाओंगे ❁ हर बार सुवारी की दुआ पढूंगे और मौकअ मिला तो पढाओंगे ❁ अगर किसी ईस्लामी त्माई को जगह नही मिलेगी तो अपनी निशस्त तर्क कर के उस पर उस को अ ईसरार बिठाओंगे ❁ अस या रेलगाडी में कोई बूढा या भीमार मुसल्मान नजर आअेगा तो उस के लिये निशस्त ज़ाली कर दूंगे ❁ मदनी काङ्किले वालों की पिदमत कइंगे ❁ अभीरे काङ्किला की ईताअत कइंगे ❁ ज़बान, आंभों और पेट का कुइले मदीना लगाओंगे या'नी





करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक मर्तबा दुरद पढा **अद्लाह** (उस पर दस रदमतें बेजता और उस के नामअे आ'माल में दस नेकियां लिखता है. (मुत्तुब))

हुजूल गोई, हुजूल निगाही से बयूंगा और प्वाहिश से कम भाउंगा
 ❁ सफ़र में ली हर मौकअ पर “मदनी ईन्आमात” पर अमल
 जारी रभूंगा ❁ वुजू, नमाज और कुरआने पाक पढने में ज़े गलतियां
 हांगी वोह आशिकाने रसूल की सोलहत में रद कर दुरुस्त करूंगा.
 (ज़े जानता हो वोह येह नियत करे के सिभाउंगा) ❁ सुन्नतें और
 दुआअें सीभूंगा और ❁ दूसरों को सिभाउंगा और ❁ ईन पर
 जिन्दगी भर अमल करता रहूंगा ❁ तमाम इर्ज नमाज़ें मस्जिद
 की पहली सफ़ में तकबीरे उला के साथ भा जमाअत अदा करूंगा
 ❁ तहजुद, ईशराक, याशत और अव्वाबीन की नमाज़ें पढ़ूंगा
 ❁ अक लम्हा ली ज़ाअेअ नहीं होने दूंगा, इरिग अवकात मिले
 तो अद्लाह अद्लाह करता रहूंगा, दुरद शरीफ़ पढता रहूंगा. (दौराने
 दसों बयान वगैरा बिगैर कुछ पढे भाभोशी से सुनना होता है) ❁
 “सदाअे मदीना” लगाउंगा या'नी नमाज़े इज के लिये मुसल्मानों को
 जगाउंगा ❁ रास्ते में जब जब मस्जिद नज़र आयेगी तो बुलन्द
 आवाज़ से! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ कइ कर कइलवाउंगा ❁ बाज़ार में जाना पडा तो बिल फुसूस नीथी निगाहें
 किये गुज़रते हुअे बाज़ार की दुआ पढ़ूंगा और मौकअ मिला तो
 पढाउंगा ❁ मुसल्मानों से पुर तपाक तरीके पर मुलाकात करूंगा
 ❁ ખૂब ईन्ज़िरादी कोशिश करूंगा ❁ हाथों हाथ मदनी काइले में
 सफ़र के लिये मुसल्मानों को तय्यार करूंगा ❁ नेकी की द्वा'वत दूंगा
 ❁ दर्स दूंगा ❁ मौकअ मिला तो सुन्नतोंं लरा बयान करूंगा ❁





इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइडे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइडे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाईस है. (ابویعلیٰ)

“सुन्नते बिलाली” अदा हुई अगर मेरी वजह से किसी मुसल्मान की दिल् आजारी हो गई तो उसी वक्त आजिजी के साथ मुआफ़ी मांगूंगा ॥ यूँके हर वक्त साथ रहने में हक तलफ़ियों का ईम्कान ज़ियादा रहता है बिलाला वापसी पर हर अेक से इर्दन इर्दन ईन्तिलाई लज़ाजत के साथ मुआफ़ी तलाफ़ी कइंगा (शर्ई) सइर से वापसी पर घर वालों के लिये तोहफ़ा ले जाने की सुन्नत अदा कइंगा (सइर अगर शर्ई हुवा तो) मस्जिद में आ कर गैर मकइल वक्त में वापसिये सइर के दो नइल पढूंगा.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

उम्मतते मुस्तफ़ा की ખुसूसियत : भीठे भीठे ईस्लामी ल्माईयो ! अल्लाहु रब्बुल ईबाद एंजळ ईस उम्मत की ખुसूसियत बयान करते हुअे पारह 4 सूरअे आले ईमरान की आयत नम्बर 110 में ईशाद इरमाता है :

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ
تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ

तरजमअे क-जुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जे लोगों में आहिर हुई, ललाई का हुकम देते हो और बुराई से मन्अ करते हो और अल्लाह (एंजळ) पर ईमान रખते हो.

उम ખुश नसीब है : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! उम ખुश नसीब है के अल्लाह एंजळ के उभीबे मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दामने करम हमारे गुनहगार हाथों में आया, यकीनन हमारे ध्यारे ध्यारे और





इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (सुन्दहाद)

भीठे भीठे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तमाम अम्बियाअे किराम صَلَّوْهُمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में सब से अफ़जलो आ'ला हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके में आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत भी तमाम उममे साबिका (या'नी पिछली उम्मतों) से अफ़जल है. अफ़जलियत का सभब हरगिज हरगिज येह नहीं के इस उम्मत में सरमाया दारों की कसरत होगी या येह लोग दुन्यवी तौर पर बहुत जियादा ता'लीम याफ़ता होंगे, धन में धन्जनियर और डॉक्टर ब कसरत होंगे, न ही इजीलत की येह वजह है के येह जंगजू, बहादुर और ताकत वर होंगे या येह इस लिये अफ़जल हैं के निहायत ही यालाक व जीरक (या'नी होशियार) होंगे बल्के धन की अफ़जलियत की वजह तो येह है के येह **أَمْرًا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيًا عَنِ الْمُنْكَرِ** (या'नी बलाई का हुकम देने और बुराई से मन्अ करने) के अहम मन्सब पर फ़ाईज हैं. **अद्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे के हम अपने इस मन्सबे आली की अहम्मियत समजने में काम्याब हो जअें.

की ता'रीफ़ : मुफ़स्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत हजरते मुफ़ती अहमद यार ખान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنَان “तइसीरे नईभी” में धन आयाते करीमा के तहूत इरमाते हैं : “अल मा'रूफ़” और “अल मुन्कर” में सारी बलाईयां अज मुस्तहब्बात ता'ईमानियात (या'नी मुस्तहब्बात से ले कर ईस्लामी अकाईद तक) दाखिल हैं, और सारी बुराईयां अज मक़ूलात ता' कुफ़ियात (या'नी ना पसन्दीदा बातों से ले कर हर किस्म के कुफ़ तक) शामिल हैं. और “अम्र” (के मा'ना हैं हुकम) या'नी (यहां) हुकम से मुराद हर किस्म





फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो, के तुम्हारी दुरद मुज तक पछोयता है. (طبرانی)

का हुकूम है, जहानी हो या कलमी या ताकत वाला, ज्वाह बड़ों से अर्ज कर के हो या साथियों को भशवरा दे कर, या छोटों को दबाव से हुकूम दे कर, या'नी तुम्हारी शान येह है के हर बलाह का हर तरह हुकूम हो और हर भूमी हर तरह कैलाओ और हर बुराई को हर तरह मिटाओ और लोगों को इस (या'नी बुराई) से बाज रभो. मजीद फरमाते हैं : इस आयते मुकदसा में गोया फरमाया गया के अै महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत ! तुम मेरी सिफते छिदायत के मजहर (या'नी जाहिर करने वाले) हो, लिहाजा तुम बेहतरीन उम्मत हो, तुम्हारे दम से तमाम लोग फ़ाअेदा उठाते रहेंगे, मैं तुम्हारे जरीअे लोगों को इमान, कुरआन और इरफ़ान (या'नी अपनी पडयान) बभूंगा और तुम्हारी ही रोशनी से उन्हें राहे जिनान (या'नी जन्त का रास्ता) दिभलाउंगा, जो मुज तक पछोयना याहे तुम्हारे जुमरे (या'नी गुरौह) में आ जाअे. (तफ़सीरे नईमी, जि. 4, स. 89, 95)

सुनतें आम करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाअें मुसल्मान महीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मुसल्मानों की भारी अकसरियत बे अमली का शिकार है :

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! मुसल्मानों में “नेकी की दा'वत” आम करने की जितनी जरूरत आज है शायद पहले कल्मी न थी. अफ़सोस सद करोड अफ़सोस ! आज मुसल्मानों की भारी अकसरियत बे अमली का शिकार है, नेकियां करना नफ़स के लिये बेहद दुश्वार और इरतिकाबे गुनाह बहुत आसान हो चुका है, मस्जिदों की वीरानी और सिनेमा





इरमाने मुस्तफ़ी : عَلَّمَ اللَّهُ عَلَّامٌ عَلَيْهِ السَّلَامُ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुर्इद शरीफ़ पढे बिगैर उठ गये तो वोह बढबूद्दर मुद्दर से उठे. (شعب الايمان)

धरों और डिरामा गाछों की रौनक, दीन का दई रभने वालों को आठ आठ आंसू रुलाती है. टीवी, वीसीआर, डिश अन्टीना, ईन्टरनेट और केबल का गलत ईस्ति'माल करने वालों ने गोया अपनी आंभों से लया धो डाली है, तक्मीले ज़रूरियात व हुसूले सलूलियात की लद से ज़ियादा जिद्दो ज़ुद्द ने मुसल्मानों की भारी ता'दाद को फ़िके आभिरत से यक्सर गाड़िल कर दिया है. गाली देना, तोलमत लगाना, बढ गुमानी करना, गीबत करना, युगली भाना, लोगों के औब ज़ानने की ज़ुस्तू में रहना, लोगों के औब उछालना, जूट भोलना, जूटे वा'दे करना, किसी का माल नालक भाना, भून बलाना, किसी को बिला ईज़ाजते शर्इ तकलीफ़ देना, कर्ज दबा लेना, किसी की यीज़ आरियतन (या'नी वक्ती तौर पर) ले कर वापस न करना, मुसल्मानों को भुरे अलकाब से पुकारना, किसी की यीज़ उसे ना गवार गुज़रने के बा वुजूद बिला ईज़ाजत ईस्ति'माल करना, शराब पीना, जूआ भेलना, योरी करना, ज़िना करना, फ़िल्में डिरामे देभना, गाने बाजे सुनना, सूद व रिश्वत का लेन देन करना, मां बाप की ना इरमानी करना और उन्हे सताना, अमानत में भियानत करना, बढ निगाडी करना, औरतों का मर्दों की और मर्दों का औरतों की मुशाबहत (या'नी नक्काली) करना, बे पर्दगी, गुज़र, तकब्बुर, लसद, रियाकारी, अपने दिल में किसी मुसल्मान का भुग़ल व कीना रभना, शुमातत (या'नी किसी मुसल्मान को मरज, तकलीफ़ या नुकसान पछोयने पर भुश डोना), गुस्सा आ ज़ाने पर शरीअत की लद





इरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ السَّلَامُ : जिस ने मुअ पर रोजे जुमुआ द्यो सो बार दुरदे पाक पढा उस के द्यो सो साल के गुनाह मुआफ़ ह्योगे. (جمع الجوامع)

तोड डालना, गुनाहों की छिर्स छुब्बे ज़ाह, बुज्ज, भुद पसन्दी वगैरा मुआमलात हमारो मुआशरे में बडी बेबाकी के साथ किये ज़ाते ह्ये.

गुनाह करने वालों का दूसरों पर भी वबाल : कसीर गुनाह अैसे ह्ये, के जिन की वजह से बराहे रास्त दूसरों को नुकसान उठाना पडता है, मसलन अगर कोई शप्स योरी का गुनाह करेगा तो उस शप्स का नुकसान ह्योगा जिस की चीज युराई ज़ायेगी, बिदकुल येही मुआमला डका डालने, अस्लिहा दिभा कर भोबाईल इन वगैरा ह्यीन लेने वालों का है. दुन्यवी नुकसानात तो अेक तरफ़ रहे गुनाह करने वाले का अस्ल बडा नुकसान तो आभिरत का है. अै सुन्नतों का दद रभने वाले आशिकाने रसूल ! ज़रा सोयिये !! गुनाहों की दलदल में इंसने वालों को कौन निकालेगा ? अज्वाकी तनज़ुल्लों और पस्तियों की तरफ़ गिरते यले ज़ाने वालों को किरदार की बुलन्दियों की ज़ानिब कौन उबारेगा ? जहन्नम में ले ज़ाने वाले आ'माल में मसइफ़ रहने वालों को जन्नत में ले ज़ाने वाले आ'माल पर कौन लगायेगा ? भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! हमें भुद ही अेक दूसरे की ईस्लाह की कोशिश करनी ह्योगी. यन्द सय्यी डिक्कयात मुलाहज़ा इरमाईये और “नेकी की दा'वत” का हिल में ज़जबा बढाईये.

मस्जिद पर ताला था : तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी के आशिकाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के महनी काइले 3 दिन, 12 दिन, 30 दिन और 12 माह के लिये राहे भुदा كَلِّمْ में सइर करते रहते ह्ये. आशिकाने





इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुज पर दुरद शरीफ़ पढे, अल्लाह कुल तुम पर
रहमत भेजेगा. (अबु अयूब)

रसूल का अेक मदनी काइला सुन्नतों की तरबियत की गरज से अेक गाँ में पलोंया वहां की मस्जिद पर तावा पडा था, लोगों से तरकीब बना कर जब मस्जिद का दरवाजा षोला तो मदनी काइले के मुसाफ़िर येह देष कर गमगीन ढो गअे के तवील अर्से से सफ़ाई न किये जाने के सभब मस्जिद के दरो दीवार गर्दो गुबार से अटे पडे हें और हर तरफ़ मकडियों के जाले तने हुअे हें. मदनी काइले वालों के इस्तिफ़सार (या'नी पूछने) पर बताया गया के “काई अर्सा हुवा यहां के मुसल्मानों ने नमाज पढनी छोड दी है जिस की बिना पर इमाम साहिब ली जा चुके हें, इसी वजह से मस्जिद पर तावा लगा दिया गया है.” अफ़सोस ! मस्जिद बन्द कर दी गई थी और गाँ में हर तरफ़ गुनाहों की गर्म बाजारी थी, अक्सर दुकानों पर गाने बाजे और T.V. पर इल्में दिखाने का सिव्सिला जारी था.

मस्जिद की डैरत अंगेज रौनकें : भीठे भीठे इस्लामी लार्थयो !
देखा आप ने ! अब मुसल्मानों की डालत किस कदर अब्तर (या'नी बुरी) डोती जा रही है ! डालां के अेक दौर अैसा ली था के रात दिन मस्जिदें आबाद हुवा करती थीं, युनान्चे हुजजतुल इस्लाम डरते सय्यिदुना इमाम अबू डामिद मुडम्मद बिन मुडम्मद बिन मुडम्मद गजाली رَضِيَ اللهُ عَنْهُ इरमाते हें : “नेक लोग इके आभिरत की वजह से मस्जिदों में पडे रहते थे ताके जितना जियादा ढो सके इस मुप्तसर तरीन जिन्दगी की मोडलत से फ़ाअेदा उठा कर आभिरत की अबदी (या'नी डमेशगी वाली) ने'मतें जम्अ कर लें. इबादत





इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरहे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरहे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मजिरेत है. (अिन सक्क़र)

करने वालों की कसरत के सबब मस्जिद के बाहर लउके वगैरा अश्याअे पुर्दों नोश (या'नी पाने पीने की चीज़ें) इरोप्त करते, यूं पाने पीने की अश्या भी इबादत गुज़ारों को ब आसानी दस्तयाब हो जाती.”

وَلَا تَقْرَأُوا فِيهَا مَوْتًا وَلَا مَوْتًا وَلَا مَوْتًا ! صُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! वोह कैसा पाकीज़ा दौर था के मस्जिदों में रात दिन रौनक होती थी और आह ! आज तो मसाजिद की वीरानी देप कर कलेजा मुंह को आता है. औ मौत का यकीन रखने वाले इस्लामी भाईयो ! जिस से बन पडे वोह कस्बे हलाल और वालिदैन व औलाद वगैरा की देपबाल नीज़ दीगर हुक्कुल इबाद की बजा आवरी के बा'द जो वक्त इरिग बये उसे ज़र जिको दुरहे, किंके आभिरत और अच्छी सोहबत में गुज़रने की कोशिश करे. (किमियाय सैदात 1 ج ص 239)

हमारे प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कोई लम्हा जिकुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से पाली न गुज़रता था. काश ! हमें भी अनमोल वक्त की कद्र नसीब हो जाती.

या पुदा कद्र वक्त की दे दे

कोई लम्हा न फ़ालतू गुज़रे

नमाज़े बा जमाअत का अज्जब जज़बा : पडले के मुसल्मान बा जमाअत नमाज़ों का भी निहायत ज़बर दस्त अेहतिमाम इरमाया करते थे युनान्ये हुजजतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ इरमाते हैं : (पारह 18 सूरतुनूर आयत नम्बर 37 में रबे गकूर عَزَّوَجَلَّ का इरमाने नूरुन अला नूर है :)





करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالصَّلَامُ : जो मुज पर अक दिन में 50 बार दुरुदे पाक पढे
क्रियामत के दिन में उस से मुसाफ़हा क़रु (या'नी हाथ मिलाओ)गा. (ابن بشكوال)

رَجَالٌ لَا تُلْهِهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ
عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَاقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَاؤُا
الرَّكُوتَ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ
فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٢٧﴾

तरजमअे क-जुल ईमान : वोह मर्द
जिन्हें गाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और
न भरीदो इरोफ्त अल्हाड (عَزَّوَجَلَّ)की
याद और नमाज बरपा रफने और
जकात देने से, डरते हैं उस दिन से जिस
में उलट ज़अेंगे हिल और आंभें.

येह आयते करीमा नकल करने के बा'द सय्यिहुना ईमाम
अब्ू हा़मिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली
رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने
लिखा है के ईस में उन नेक लोगों की तरफ़ ईशारा है के उन में से जो
लूडार होता था वोह अगर जर्ब (या'नी थोट) लगाने के लिये
हथोडा ठीपर उकाअे हुअे होता और ईसी हालत में अज़ान की
आवाज़ सुनता तो अब हथोडा लोहे वगैरा पर मारने के बज्जअे
इौरन रफ देता नीज़ अगर मोयी या'नी यमडा सीने वाला सूई
यमडे में डाले हुअे होता और जूं ही अज़ान की आवाज़ उस के कानों
में पडती तो सूई को बाहर निकाले बिगैर यमडा और सूई वही
छोड कर बिला तापीर मस्जिद की तरफ़ यल पडता. या'नी उठे हुअे
हथोडे की अक जर्ब लगा देना या सूई को दूसरी तरफ़ निकालना भी
उन के नजदीक तापीर में शामिल था हावां के ईस में वक्त ही
कितना लगता है !

(क़िषायै सैदात ज 1 व 239)





इरमाने मुसतफा ﷺ : बरोजे डियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोड
डोगा जिस ने दुन्या में मुज पर जियादा दुऱुदे पाक पडे डोंगे. (तुर्मडी)

में पांथों नमाजें पढूं बा जमाअत डो तौंकीक अैसी अता या ँवाडी
में पढता रडूं सुन्नतें वक्त डी पर डों सारे नवाङ्किल अदा या ँवाडी

डे शौंके तिलावत डे जौंके ँबादत

रडूं बा वुऱूं में सदा या ँवाडी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बूढा रोने लगा : आशिकाने रसूल का 30 दिन का अेक मदनी
काङ्किला राडे षुदा عَزَّوَجَلَّ में सङ्गर पर था. ँस दौरान अेक मकाम
पर सुन्नतें सीषने सिषाने के मदनी डडके में जष “गुस्व के इराँज”
सिषाअे गअे तो अेक बुऱुर्ग रोते डुअे कडने लगे के “मेरी उअ्र 70
साल डो युकी है मगर मुजे गुस्व के इराँज की मा'लूमात न थी,
आज मदनी काङ्किले की बरकत से मुजे गुस्व के इराँज सीषने को
मिले, अङ्सोस ! मुजे तो येड तक पता न था के गुस्व में इराँज
भी डोते हैं !”

सब से पडले क्या सीषना इँज है : भीडे भीडे ँस्वामी
भाँथयो ! गुस्व के इराँज तक से ला ँल्मी का अे'तिराङ्क करने वाले
70 सालड ँस्वामी भाँथ के वाङ्किले से मदनी काङ्किलों की जङ्गत व
अडम्मियत का आप बषूबी अन्दाजा लगा सकते हैं. डिसी
मुसल्मान को बीमार या लूक ष्यास में गिरिङ्गतार या बे रोजगार
व कर्जदार या आङ्गतों में गिरिङ्गतार या दुन्यवी मुसीबतों का शिकार
या मुश्किलात से डो यार डेष कर डमें तर्स आता है और आना भी
याडिये लेडिन गुनाडों की लरमार के सबब आषिरत को दाव पर





इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक मर्तबा दुरूद पढा **अल्लाह** उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामअे आ'माल में दस नेकियां लिपता है. (ترمذی)

लगाने वाले और अपने आप को कब्र व जहन्नम के अजाब का हकदार बनाने वाले मुसल्मान पर बिदकुल ही तर्स नही आता येह काबिले अइसोस है गोया दुन्यवी मुसीबतों के मुकाबले में आभिरत की मुसीबतों को कमतर समज लिया गया है ! डालां के “जिस्मानी मरीज” के मुकाबले में इहानी या'नी गुनाहों का मरीज जियादा तवज्जोह का मुस्तहिक है के मुसल्मान को दुन्या की तकलीफें आभिरत में राहतें दिला सकती हैं मगर गुनहगार को उस के गुनाह दोज्भ के गार में पडोंया सकते हैं. लिहाजा इस बात की शिदत के साथ ज़रत है के एल्मे दीन की रोशनी कैलाई ज़ाअे के मा'लूमात डोंगी जल्मी तो बन्दा गुनाहों से बयेगा, अगर गुनाह व सवाब की शुदबुद ही न डोगी तो येह सुन्नतों त्मरी जिन्दगी क्यूंकर गुज़ार सकेगा ! सद् करोड अइसोस ! आज कल नादान मुसल्मान नइसो शैतान के बहकावे में आ कर इस इनी जहान पर तो दिल्ो ज़ान से कुरबान है मगर उसे इराईज तक का एल्म नही डालां के सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह्तशम **كَلْبُ الْعِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ** : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाईद इरमाया : या'नी एल्म ड़ासिल करना हर मुसल्मान पर इर है. (ابن ماجه 1616 ص 1616 حديث 1224)

इस डदीसे पाक से स्कूल कोलेज की मुरव्वज्हा दुन्यवी ता'लीम नही बल्के ज़री दीनी एल्म मुराद है. लिहाजा सभ से पहले ईस्लामी अकाईद का सीपना इर है, इस के आ'द





ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : શબે જુમુઆ ઓર રોઝે જુમુઆ મુઝ પર દુરુદ કી કસરત કર લિયા કરો જો એસા કરેગા ક્રિયામત કે દિન મેં ઉસ કા શકીઅ વ ગવાહ બનૂગા. (شعب الایمان)

નમાઝ કે ફરાઈઝ વ શરાઈત વ મુફ્ફિસદાત (યા'ની નમાઝ કિસ તરહ દુરુસ્ત હોતી હૈ ઓર કિસ તરહ ટૂટ જાતી હૈ) ફિર રમઝાનુલ મુબારક કી તશરીફ આવરી હો તો જિસ પર રોઝે ફર્ઝ હોં ઉસ કે લિયે રોઝોં કે ઝરૂરી મસાઈલ, જિસ પર ઝકાત ફર્ઝ હો. ઉસ કે લિયે ઝકાત કે ઝરૂરી મસાઈલ, ઈસી તરહ હજ ફર્ઝ હોને કી સૂરત મેં હજ કે, નિકાહ કરના યાહે તો ઈસ કે, તાજિર કો તિજારત કે, ખરીદાર કો ખરીદને કે, નોકરી કરને વાલે ઓર નોકર રખને વાલે કો ઈજારે કે, **وَعَلَىٰ هَذَا الْقِيَاسِ** (યા'ની ઓર ઈસી પર ક્રિયાસ કરતે હુએ) હર મુસલ્માન આકિલ વ બાલિગ મર્દ વ ઓરત પર ઉસ કી મૌજૂદા હાલત કે મુતાબિક મસ્અલે સીખના ફર્ઝે એન હૈ. ઈસી તરહ હર એક કે લિયે મસાઈલે હલાલ વ હરામ ભી સીખના ફર્ઝ હૈ. નીઝ મસાઈલે કલ્બ (બાતિની મસાઈલ) યા'ની ફરાઈઝે કલ્બિયા (બાતિની ફરાઈઝ) મસલન આજિઝી વ ઈખ્લાસ ઓર તવક્કુલ વગૈરહા ઓર ઈન કો હાસિલ કરને કા તરીકા ઓર બાતિની ગુનાહ મસલન તકબ્બુર, રિયાકારી, હસદ, બદ ગુમાની, બુઝ વ કીના, શુમાતત (યા'ની કિસી કી મુસીબત પર ખુશ હોના) વગૈરહા ઓર ઈન કા ઈલાજ સીખના હર મુસલ્માન પર ફર્ઝ હૈ. (તફ્ફીલી મા'લૂમાત કે લિયે ફતાવા રઝવિચ્ચા જિલ્દ 23 સફહા 613-624 મુલાહઝા ફરમાઈયે) મોહલિકાત યા'ની હલાકત મેં ડાલને વાલી ચીઝોં જૈસા કે વા'દા ખિલાફી, ઝૂટ, ગીબત, ચુગલી, બોહતાન, બદ નિગાહી, ધોકા, ઈઝાએ મુસ્લિમ વગૈરા વગૈરા





करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अेक बार दुरेद पढता हे **अल्लाह** उस के लिये अेक किरात अज् लिभता हे और किरात उबुद पहाड जितना हे. (عبدالرزاق)

तमाम सगीरा व कबीरा गुनाहों के बारे में ज़रूरी अहकाम सीपना भी इर्ज़ है ताके धन से बचा जा सके. ड्राईवर व पेसेन्जर, मियां भीवी, वालिदैन व औलाद, भाई और बहन, पडोसी व रिशतेदार, कर्ज प्वाह व कर्जदार, सुपर वाईजर व ठेकेदार, मजदूर व मि'भार, किसान व जमीन दार, किराअे पर लेने वाला और किराअे पर देने वाला, डाकिम व मइकूम, उस्ताज व शागिर्द, डॉक्टर व हकीम, मुकीम व मुसाफ़िर, कस्साब व माहीगीर, यन्दा करने वाला और यन्दा देने वाला, मस्जिद या मद्रसा या कब्रिस्तान या समाज् इंदारे वगैरा के मुतवल्लियान, जानवर बेचने वाला और पालने वाला, यरवाहा, धोबी, दरजी, बढई (CARPENTER), लोहार, कारीगर आभिरुज्जिक पांयों से धुलवाने, सिलवाने और बनवाने वाले वगैरा वगैरा हर अेक के लिये उस की मौजूदा हालत के मुताबिक ज़रूरी मसाईल जानना इर्ज़े अैन है. शैतान के इस वस्वसे पर हरगिज तवज्जोह मत दीजिये के सीपेंगे तो अमल करना पडेगा बल्के इस हुकमे शर्ई को जेहन में रभ लीजिये के हस्बे हाल इर्ज़े उलूम न जानना गुनाह और न जानने के सबअ गुनाह कर गुजरना गुनाह दर गुनाह व हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है.

पुढाया हम इस्लामी अहकाम सीपें

बचाअें जो दोजभ से वोह काम सीपें

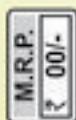
صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ



अच्छी निव्यत की जरकत से मगिफ़रत हो गध

भलीका छात्रन रशीद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की जीजा सुबैदा को किसी ने भ्वाभ में दभ कर पूछा : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ يَا'नी अब्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआमला करमाया ? कछा : अब्लाह पाक ने मुजे बभश दिया. पूछा : क्या मगिफ़रत का सबभ वोछी सदक बनी जिसे आप ने बहुत जियादा माल भर्व कर के मककअे मुकर्रमा की तरफ़ बनवाया था ? कछा : नहीं, उस सदक का सवाभ तो काम करने वालों को मिला, मुजे तो अब्लाह पाक ने मेरी अच्छी निव्यतों की वजह से बभशा छे.

(الرسالة الفشيرية، ص ۴۴)



Maktabatul
Madina

- 📍 Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 📞 9022177997, 9320558372
- 📍 Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 📞 9327168200
- 📍 421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
- 📞 011-23284560, 8178862570 📞 For Home Delivery: 9978626025*Doc-App
- 📧 feedbackmmhind@gmail.com 🌐 www.dawateislamihind.net